ISSN 0972-5636

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 39 अंक 1 जुलाई 2018

ग्रामीण समाज और अंतर्राष्ट्रीय स्कूल में आधुनिक शिक्षा

[illegible]*

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, सामाजिक परिवर्तन इस परिवर्तन का हिस्सा है। आज, पूरे भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया बढ़ रही है। यह भी माना जाता है कि 2040 तक देश की आधी आबादी शहरीकरण के अंतर्गत आ जाएगी। शिक्षा क्षेत्र भी सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित हो रहा है। नए शहरीकृत या 'कस्बे' क्षेत्रों में 'अंतर्राष्ट्रीय स्कूल' बड़े स्तर पर खुल रहे हैं। ये स्कूल दावा करते हैं कि ये 'आधुनिक' शिक्षा प्रदान करते हैं। माता-पिता भी अपने बच्चों को इन स्कूलों में भेजने में रुचि रखते हैं, लेकिन इस बात को अनदेखा किया जा रहा है कि बच्चों को दो अलग-अलग दुनिया में रहना पड़ रहा है (पहली उनका स्वयं का सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन और स्कूल का जीवन)। यह अध्ययन ग्रामीण बच्चों की अस्मिता के निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए किया गया है, जहाँ बच्चा घर पर और स्कूल में, दो अलग-अलग जीवन जी रहा है। इस शोध में यह समझने का प्रयास किया गया कि बच्चा आधुनिकता के मूल्यों को कैसे समझता है। इसके परिणाम उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया पर आधारित हैं। शोधक द्वारा विकसित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करके बच्चों के विचार एकत्र किए गए। ये अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि स्कूल और बच्चे के सामाजिक अनुभवों के बीच एक विरोधाभास है, जो आधुनिकता से जुड़े मूल्यों और बच्चे के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के बीच [illegible] तनाव के संदर्भ में बच्चे की अस्मिता के संकट का कारण बनता है। यह भी पाया गया कि 'अंतर्राष्ट्रीय स्कूल' इस तरह के विरोधाभास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तावना

समाज परिवर्तनशील है, जिसमें परिवर्तन अवश्यंभावी है। यदि हम समाज में सामंजस्य और निरंतरता को बनाए रखना चाहते हैं तो हमें यथास्थिति अपने व्यवहार को परिवर्तनशील बनाना ही होगा। यदि ऐसा न होता तो मानव समाज की इतनी प्रगति संभव नहीं होती। निश्चित और निरंतर परिवर्तन मानव समाज की विशेषता है। शहरीकरण इस सामाजिक परिवर्तन का जरिया है। भारत में शहरी भारत की विकास दर ग्रामीण भारत की विकास दर से सापेक्षिक अर्थों में ज्यादा है। सन् 2001–2011 के दशक में शहरी भारत ने अपनी आबादी में 9.1 करोड़ लोगों को जोड़ा, जबकि ग्रामीण भारत ने इसी अवधि में 9 करोड़ लोगों को जोड़ा। भारत में शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो, जहाँ शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू न हुई हो। शिक्षा समाज का एक पक्ष है। शिक्षा और समाज एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव शिक्षा पर आसानी से देखा जा सकता है।

*शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110 007